भारत के उत्कर्ष और स्वावलंबन का आधार : शिक्षा का भारतीयकरण

विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति वाला देश भारत अपने श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति के कारण कुछ शताब्दी पूर्व तक सम्पूर्ण विश्व का सिरमौर रहा है | व्यक्ति और समाज के ज्ञान, बुद्धि, और कौशल के नियमित और निरंतर परिष्कार के लिए भारतीय आचार्यों और समाजनिर्माताओं ने एक अनूठा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा क्रम बनाया था | भारत में शिक्षा का उद्देश्य प्रकृति के रहस्यों को समझते हुए पञ्च महाभूतों और उनके पञ्चतन्मात्राओं को स्व-भाव में स्थिर बनाये रखते हुए सांसारिक जीवन में अभ्युदय तथा बाद में निश्रेयस की प्राप्ति करना था |

अतीत का सही ज्ञान, वर्तमान की ठीक समझ तथा भविष्य का सही अनुमान लगाने से युक्त समाज का निर्माण भारतीय शिक्षा के उदेश्यों में था | अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारतीय आचार्यों ने सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए उत्कृष्टतम ग्रंथों की रचना किया था | वेद, वेदांग, उपांगो के अतिरिक्त धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिल्पशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, गणित, खगोलशास्त्र, विज्ञान, आदि के अनेक ग्रंथों की रचना भारतीय आचार्यों द्वारा किया गया था | व्यक्ति और समाज जीवन का एक भी ऐसा पहलु नही था जो भारतीय आचार्यों से अछूता रह गया हो या जिसपर उत्कृष्टतम ग्रन्थ की रचना नही की गयी हो | भारत में कठिन से कठिन विषय को कथाओं के माध्यम से समझा देने की विशेष शैली थी | कथाओं के माध्यम से गूढ़ विषयों को सरलता से समझाने के लिए पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों की रचना भी विद्वान् आचार्यों द्वारा किया गया था | ध्यातव्य है की आज तक बाइबिल के बाद विश्व में प्रचलित अनेक भाषाओँ में सबसे अधिक किसी ग्रन्थ का अनुवाद हुआ है तो वह पंचतंत्र ही है | भारत में औपचारिक शिक्षा केंद्र के रूप में गुरुकुलों का सघन और विशाल तंत्र था | ये गुरुकुल आरंभिक शिक्षा से लेकर उच्च-अध्ययन के केंद्र थे | गुरुकुल की औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त भारतीय मनीषा ने अनेक ऐसी परम्पराओं की स्थापना किया था जो नियमित रूप से समाज के ज्ञान, बुद्धि और कौशल को परमार्जित करते रहते थे तथा व्यक्ति और समाज के विवेक को जागृत रखते थे | 12 वर्षों में एक महाकुम्भ तथा 6 वर्षों में एक बार अर्धकुम्भ देश के चार अलग- अलग स्थानों पर आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य समाज का शिक्षण और परिष्करण ही था | इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष वर्षा ऋतु में साधू-सन्यासियों द्वारा चौमासे में समाज को सजग, सहज और विवेकवान बनाने की उत्कृष्ट परंपरा रही है |

परन्तु कालक्रम में धीरे-धीरे भारतीय समाज स्थापित परम्पराओं से दूर होने लगा अपनी ही व्यवस्थाओं की अवहेलना करने लगा जिस कारण समाज का सर्वांगीण क्षरण होने लगा| सभी उत्कृष्ट परम्पराएं कर्मकांड बनकर रह गयी, अपने मूल उद्देश्यों से भटक कर बहुत दूर चली गयीं | परिणामस्वरूप भारतवर्ष पर नियमित आक्रमण होने लगे | आर्थिक और सामरिक शक्ति में बहुत अधिक होने के बाद भी अपनी विवेकशुन्यता के कारण हम इन आक्रमणों का उपयुक्त प्रत्युत्तर नही दे पाए | समाज के विभिन्न घटक अपने तात्कालिक हितों को अधिमान देने लगे और दीर्घकाल तक के लिए हम पहले आक्रमण और लुट उसके बाद निरंतर सांस्कृतिक सीमाओं का संकुचन और अंततः सम्पूर्ण दासता के लिए अभिशप्त हो गए |

भारत के उत्कर्ष और स्वावलंबन का आधार : शिक्षा का भारतीयकरण

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के बाद की शिक्षा पद्धति और शिक्षा तंत्र ने भारतीय समाज को पूरी तरह से परावलम्बी और परानुगामी बना दिया | इस शिक्षा पद्धति के कारण दूसरी अनेक प्रकार की जटिलताएं उत्पन्न हो गयीं | व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का स्वावलंबी होना अनिवार्य है | जिस प्रकार स्वाभिमान का आधार स्वावलंबन है उसी प्रकार स्वावलंबन का आधार शिक्षा है | उचित शिक्षा ही किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सुख, समृद्धि और स्वावलंबन का आधार है | कहा भी गया है-

विद्या ददाति विनयम विनयाद याति पात्रताम -| पात्रत्वाद धनमाप्नोत धनाद धर्मस्ततःसुखं ||
अर्थात् विद्या से विनय की प्राप्ति होती है, विनय से पात्रता और पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म का पालन होता है और अंततः धर्मपालन करने सूख की प्राप्ति होती है |
अगर हम आज की शिक्षा व्यवस्था को देखते है तो पाते हैं की एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने का आधार दक्षता नही उतीर्णता है | प्रति वर्ष कुल जनसँख्या के लगभग 1प्रतिशत से कुछ अधिक छात्र 12वी की परीक्षा पास करते हैं | 12 वर्षों की इस विद्यालयी शिक्षा के उपरान्त भी कुछ अपवादों को छोड़कर लगभग सभी छात्र व्यावहारिक ज्ञानशून्य होते हैं | धन के आभाव में कुछ छात्रों की शिक्षा यात्रा यही समाप्त हो जाती है | बचे हुए छात्रों में से अधिकांश अपने असमानुपातिक महत्वाकांक्षाओं के अश्व पर सवार होकर आगे की यात्रा तय करते हैं | बहुत सारा समय, संसाधन और उर्जा के व्यय होने के बाद भी निराशा ही हाथ लगती है | इस निराशा के कारण अवसाद उत्पन्न होता है | यह अवसाद अनेक विकारों के साथ-साथ आपराधिक मनोवृति को जन्म देता है | जिस समाज के समय, संसाधन और उर्जा के व्यय के बाद भी समाज का एक बड़ा भाग निराशा के अन्धकार की ओर निरंतर बढ़ रहा है तो उस समाज या राष्ट्र को अपने तंत्रों और व्यवस्थाओं के मूल पर गंभीरता से पुनर्विचार करना होगा अन्यथा उस समाज या राष्ट्र का पतन निश्चित है |

भारतवर्ष के स्वर्ण युग को वापस लाने के लिए हमें भारतीय शिक्षा व्यवस्था का सम्पूर्ण रूप से भारतीयकरण करना होगा | शिक्षा व्यवस्था के भारतीयकरण से तात्पर्य भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय संस्कृति, भारतीय भूगोल, भारतीय समाज को ध्यान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना | ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिससे राष्ट्र का सांस्कृतिक,सामाजिक, आर्थिक, सामरिक सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष हो | इसके लिए हमें अपने ऋषियों, आचार्यों द्वारा प्रतिपादित

भारत के उत्कर्ष और स्वावलंबन का आधार : शिक्षा का भारतीयकरण

शिक्षा व्यवस्था और शास्त्रों का गहन अनुशीलन करना होगा | उस शिक्षा व्यवस्था और उन ऋषिप्रणित ग्रंथों में वर्णित ज्ञान को आधार बनाकर हमें युगानुकुल शिक्षा व्यवस्था का नया आधार तैयार करना होगा | हमें शिक्षा व्यवस्था की ऐसी संरचना तैयार करनी होगी जो छात्रों को सक्षम और स्वावलंबी बना सके | जिससे समाज के संसाधनोंs, उर्जा और समय का अपव्यय रुके | और इसके लिए आवश्यक है की वर्तमान के यथार्थ को ध्यान में रखते हुए और प्राचीन ज्ञान परंपरा से सीखते हुए प्रारंभिक और उच्च शिक्षा के स्तर पर नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया जाएँ | संपूर्ण शिक्षा में संस्कृत और स्वभाषा को ही माध्यम बनाया जाये | वैज्ञानिक तरीके से अंग्रेजी सिखने की भी पूरी व्यवस्था होनी चाहिए | शिक्षा के हर स्तर पर ज्ञान और कौशल दोनों को बराबर महत्व दिया जाये | एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने का मानदंड उतीर्णता के स्थान पर दक्षता किया जाए | पाठ्यक्रमों को रुचिकर, सरल और सुबोध बनाया जाये | प्रारम्भिक शिक्षा की संरचना ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्रों के सर्वांगीण विकास की सशक्त आधारशिला का निर्माण हो | प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान अर्जित ज्ञान और कौशल के कारण छात्र आत्मविश्वास से भरे हों | छात्र अपना मूल्यांकन स्वयं कर सकें तथा आगे का मार्ग स्वयं चुन सकें| एकबार गहन अनुशीलन, चिंतन और शोध के पश्चात पाठ्यक्रम का निर्माण हो जाये तो वर्तमान पद्धति में भी कई स्तरों पर इसके प्रभाव और परिणामों को परखा जा सकता है | प्रारम्भ में अगर यह कठिन प्रतीत होता हो तो छोटे स्तर पर प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक पूरक पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सकता है, जिसके द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ दूरदर्शिता, प्रबंधन, उद्यमिता और नेतृत्व कौशल के बीज का प्रतिरोपण किया जा सकता है | जिस शिक्षा पद्धति से हम सब पढ़कर निकले हैं या जिस परिवेश में हम जी रहे हैं वहां यह थोडा कठिन अवश्य दीखता है, परन्तु भारतीय परंपरा के विद्वान् यह जानते हैं की गणित आदि कठिन विषयों को भी व्यावहारिकता से जोड़कर बहुत सरलता से पढ़ा दिया जाता था | अर्थशास्त्र और अनेक विषयों को रोचक कथाओं के माध्यम से पढ़ा दिया जाता था | इस प्रकार की साधना करनेवाले अनेक विद्वान् अभी भी हमारे देश में हैं जिन्होंने अपनी साधना से उत्कृष्टतम भारतीय ज्ञान परंपरा और उसके पठन-पाठन की परंपरा को जीवित रखा है | सरकार और समाज के सक्षम व्यक्तियों और संस्थाओं के सद्प्रयास से ऐसे विद्वानों के निर्देशन में न केवल पाठ्यक्रमों का निर्धारण किया जाना चाहिए अपितु सुयोग्य शिक्षकों के निर्माण की व्यवस्था भी करनी चाहिए | आज जिस प्रकार की चुनौतियाँ देश के सामने खड़ीं हैं उनका सामना करने तथा इन चुनौतियों को अवसर में बदलने का सामर्थ्य भारतीय ज्ञान परंपरा में है| आवश्यकता इस बात की है की हम वर्तमान को समझें, अतीत से सीखें और सुन्दर भविष्य की आधारशिला रखें |

डॉ नन्द किशोर गर्ग

चेयरमैन- कौटिल्य इंटरनेशनल फाउंडेशन

चांसलर-महाराजा अग्रसेन विश्वविद्यालय

भारत के उत्कर्ष और स्वावलंबन का आधार : शिक्षा का भारतीयकरण

अजित तिवारी

निदेशक - कौटिल्य इंटरनेशनल फाउंडेशन